BA part-II (1) LL(H) Date - 06.05.2020

प्रश्न: मध्यकालीन मैथिली नाटक विकास यात्राक वर्णन करू।

उत्तर: मध्यकालसँ पूर्व साहित्यक भाषा संस्कृत आ प्राकृत छल। कालक्रमे संस्कृत जनसाधारण भाषा नहि रहल, ओकर स्थान प्राकृत लेलक। फलतः संस्कृतमे नाटक रचनाक प्रवृति समाप्त भ' गेल। दोसर मध्यकालमे मुसलमानी प्रभाव बढ़ि गेल। तहिँ अराजकताके स्थिति उत्पन्न भ' गेल। दोसर मध्यकालमे मुसलमानी प्रभाव बढ़ि गेल। तहिँ अराजकताक स्थिति उत्पन्न भ' गेल। नाटककार लोकनि जनभाषाकेँ अपनौलनि। भाषा परिवर्तनक आधार बनल ज्योतिरीश्वरक धूर्तसमागम आ विद्यापतिक रचनाक प्रभाव ओ लोकप्रियता। ओहि कालमे नाटकक लोकप्रियता ओहिमे सन्निहित गीत-संगीत होयब छल।

मध्यकालीन मैथिली नाटकक विकास तीन भिन्न-भिन्न होमय लागल जे क्रमशः बंगालक नाटककेँ 'यात्रा' कहल गेल। असामक नाटककेँ अंकिया नाटक आ मिथिलाक नाटककेँ किरतनिया नाटक।

Scanned with CamScanner

मैथिलीक किरतनियाँ नाटक - मिथिलामे किरतनियाँ नाटक परम्परा बीसम शताब्दीक प्रथम चरण धरि रहल। एहि परम्पराक जन्मदाता उमापतिकेँ कहल जाइछ। एहि परम्पराक प्रमुख नाटक आ नाटककार छथि - विद्यापति - गोरक्ष विजय, गोविन्द - नलचरित, रामदास - आनन्द विजय, उमापति - पारिजात हरण, देवानन्द - रुक्मिणी हरण, लालकवि - गौरीस्वयंवर, नन्दीपति - कृष्णकेलिमाला, गोकुलानन्द - मदन - चरित, शिवदत्त - गौरीपरिणय, कर्ण जयानन्द - रुक्मांगद, श्रीकान्तगणक - श्री कृष्णजन्म रहस्य, कान्हारामदास - गौरी स्वयंवर रत्नपाणि - उषाहरण, भानुनाथ - प्रभावती हरण, हर्षनाथ उषाहरण आ माधवानन्द के रचना केलनि।

एहि नाटक सभमे रंगमंचीय निर्देश प्रायः संस्कृतमे अछि। प्रायः सभ नाटकक कथा-वस्तु धार्मिक पौराणिक आख्यान पर आधारित अछि। कथोपकथन संस्कृत आ प्राकृतमे अछि।

Scanned with CamScanner

अंकिया नाटक (आसामक मैथिली नाटक)

सोलहम शताब्दी आसामक वैष्णव सम्प्रदाय जनसाधारणक बीच अपना मतक प्रचार करबा लेल मैथिली कें माध्यम बनौलनि। एहि नाटकमे श्रृंगार वर्णन नहि भेल, स्त्रीपात्र मातृरूपमे भेटत मुदा एहि नाटक सभ मे मैथिली शब्दक प्रयोग खूब भेल अछि। अंकिया नाटक रचनाकारमे प्रमुख छथि - शंकरदेव हिनक छौ-टा नाटक अछि - कालियादमन, पत्नी प्रसाद, केलि गोपाल, रुक्मिणी हरण, पारिजात हरण, रामविजय, माधव देव। हिनक नाटक अछि - अर्जुन भंजन, भूमिलेटोवा, भोजनविहार, भूषण हेरोवा, चोर धरा, कटोरा खेलोवा, पिम्परा गुचोवा, रास झुमरा।

एतावता मध्यकाल मैथिली नाटक रचना हेतु स्वर्णकाल कहल जा सकैछ। एहिकालमे मैथिली शब्दक सेहो विकास भेल।

रानी मिश्रा
मैथिली विभाग
R.N. College
Pandaul, Madhubani